Class – VIII विषय- हिन्दी पाठ्यपुस्तक- वसंत	पाठ- 9 कबीर की साखियाँ दिनांक- 08.10.2021

कवि- कबीरदास

शब्दार्थ सहित व्याख्या- **(छात्र केवल पढ़ें व याद करें)**

1 **जाति न पूछो साध की, पूछ लीजिए ज्ञान ।**
मोल करो तरवार का, पड़ा रहन दो म्यान ।।

शब्दार्थ-

साध= सज्जन व्यक्ति । मोल= मूल्य, कीमत । तरवार= तलवार । म्यान= जिसमें तलवार रखी जाती है ।

व्याख्या- कबीरदास जी कहते हैं कि सज्जन व्यक्ति की जाति नहीं पूछनी चाहिए। यदि पूछना भी पड़े तो उनके ज्ञान के बारे में पूछ लेना चाहिए । इसके लिए कवि ने उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा है कि युद्ध के मैदान में तलवार की धार काम आती है न कि उसके म्यान की सुंदरता । अतः किसी व्यक्ति की बाह्य सुंदरता की अपेक्षा उसके अंदर छिपे ज्ञान को जानना चाहिए। वही ज्ञान जीवन को उच्च बनाएगा ।

2. **आवत गारी एक है, उलटत होइ अनेक ।**
कह कबीर नहिं उलटिए, वही एक की एक ।।

शब्दार्थ-

आवत = आना । गारी = अपशब्द, गाली । उलटत = उलटना ।

व्याख्या - कबीरदास जी कहते हैं कि किसी के द्वारा दी गई कोई गाली जब आती है, तब वह एक होती है लेकिन जब इसी गाली को प्रतिक्रिया स्वरूप लौटाया जाता है तो यह अनेक रूप धारण कर लेती है । व्यक्ति एक गाली के बदले दूसरे को अनेक गालियाँ देता है । हमें किसी को भी प्रतिक्रिया स्वरूप ऐसे अभद्र वचन नहीं देने चाहिए । कबीर बुराई को बुराई से नष्ट न करके अच्छाई से मिटाना चाहते हैं ।

3. **माला तो कर में फिरै, जीभि फिरै मुख माँहि ।**
मनुवाँ तो दहुँ दिसि फिरै, यह तो सुमिरन नाहिं ।।

शब्दार्थ-

कर = हाथ । जीभि = जीभ । माँहि = में । दहुँ दिसि = दसों दिशाओं में । फिरै = घूमना । सुमिरण = स्मरण ।

व्याख्या - कबीरदास जी कहते हैं कि मनुष्य ईश्वर को स्मरण करने के लिए माला के मनकों (मोतियों) को अपने हाथों से घुमाता रहता है, जीभ ईश्वर का नाम जपता रहता है, लेकिन उसका मन स्मरण करने की बजाय दसों दिशाओं में घूमता रहता है अर्थात मनुष्य का मन मोह-माया में पड़ा रहता है। इस चंचल मन के कारण ही वह ईश्वर का स्मरण नहीं कर पाता है । कबीर कहना चाहते हैं कि मात्र मानव का ही मन ऐसा है जो निरंतर गतिशील रहता है । इस प्रकार की भक्ति से ईश्वर को प्राप्त नहीं किया जा सकता ।

4. तिनका कबहुँ न नींदिए, जो पाऊँ तलि होइ ।
उड़ि पड़ै जब आँखि मैं, खरी दुहेली होइ ।।

शब्दार्थ- नींदिए = निंदा करना, बुराई करना । पाऊँ तलि = पाँव के नीचे । उड़ि = उड़कर । खरी = बहुत अधिक । दुहेली = कष्ट, पीड़ा ।

व्याख्या- कबीरदास जी कहते हैं कि हमें कभी भी उस घास की निंदा नहीं करनी चाहिए, जो हमारे पैरों के नीचे दबी हुई हो, क्योंकि जब घास का तिनका उड़कर आँखों में पड़ता है तब अत्यंत पीड़ा एवं कष्ट होता है ।अर्थात हमें कभी भी अपने से निम्न एवं गरीब लोगों की निंदा नहीं करनी चाहिए। क्योंकि जब ये दबे हुए लोग जागृत होते हैं तो वह अत्यधिक पीड़ा पहुँचाते हैं।

5. जग में बैरी कोई नहीं, जो मन सीतल होय ।
या आपा को डारि दे, दया करै सब कोय ।।

शब्दार्थ- जग= संसार । बैरी= दुश्मन, शत्रु । सीतल= धैर्यशील, ठंडा । आपा= घमंड, अहंकार ।

व्याख्या- कबीरदास जी कहते हैं कि जिस व्यक्ति का मन शीतल है, उसका इस विश्व में कोई शत्रु नहीं होता, अर्थात शांत एवं धैर्यशील व्यक्ति का कोई शत्रु नहीं होता.। कबीर मनुष्य से कहते हैं कि यदि वह अपने क्रोध को शांतकर प्यार और सदाचार से जीवन-यापन करे तो जीवन सुखमय बन जाएगा ।

===00===

पाठ पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर-

1. प्रथम दोहे में म्यान किसका प्रतीक है ?

   क) ज्ञान का ग) ध्यान का

   ख) जाति का घ) धर्म का

2. वर्ण से अधिक महत्त्वपूर्ण क्या है ?

   क) जाति ग) ज्ञान

   ख) धर्म घ) धन

3. कबीर के अनुसार गालियों के आदान-प्रदान से क्या होता है ?

   क) विवाद ग) स्नेह

   ख) मित्रता घ) व्यापार

4. कवि क्या नहीं देने की प्रेरणा दे रहा है ?

   क) सलाह ग) प्रेम

   ख) गाली घ) सम्मान

5. मनुष्य का मन कहाँ-कहाँ फिरता है ?

   क) घर में ग) बाज़ारों में

   ख) ईश्वर के स्मरण में घ) दसों दिशाओं में

6. दोहे के अनुसार 'कर' का क्या अर्थ है ?

   क) मन ग) मस्तिष्क

   ख) हाथ घ) विचार

7. आँख में पड़कर घास क्या देती है ?

   क) पीड़ा ग) खुशी

   ख) बुद्धि घ) उपरोक्त सभी

8. इस दोहे के कवि कौन हैं ?

   क) सूरदास ग) तुलसीदास

   ख) कबीरदास घ) मीरा

9. अहंकार छोड़ने पर सब क्या करते हैं ?

   क) विद्रोह ग) क्रोध

   ख) गर्व घ) स्नेह

10. कवि के अनुसार क्या शीतल होना चाहिए ?

क) मन ग) तन

ख) आँखें घ) विचार

<u>छात्र निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपनी वसंत अभ्यास पुस्तिका में स्वच्छ व सुंदर लिखावट में लिखेंगे -</u>

क) आपके विचार से आपा और आत्मविश्वास में तथा आपा और उत्साह में क्या कोई अंतर हो सकता है ? स्पष्ट करें ।

उत्तर- **<u>आपा और आत्मविश्वास में अंतर</u>** - 'आपा' क्रोध का भाव प्रकट करता है । यह उत्तेजना को बढ़ाने का कार्य करता है । क्रोध शारीरिक क्षमता को घटाने तथा शरीर को गलाने का कार्य करता है ।

दूसरी तरफ आत्मविश्वास अंतर्मन की दृढ़ता और स्पष्टवादिता को प्रकट करता है । यह किसी भी कार्य को करने की क्षमता को दर्शाता है । आत्मविश्वास शक्ति को संगठित करने व मन को एकजुट रखता है ।

<u>आपा और उत्साह</u> - आपा क्रोध व गुस्से का पर्याय है दूसरी तरफ उत्साह उमंग का दूसरा नाम है । क्रोध की तुलना में उत्साह रक्त का उचित संचार करता है । यह मन को प्रसन्न रखता है । किसी कार्य को करने में उत्साह की अधिक आवश्यकता होती है । अतः उत्साह जितना अधिक हो व क्रोध जितना कम हो, उतना ही अच्छा है ।

ख) कबीर के दोहों को 'साखी' क्यों कहा जाता है ? ज्ञात कीजिए।

उत्तर- 'साखी' शब्द 'साक्षी' शब्द से बिगड़कर बना है। इसका अर्थ होता है 'प्रमाण' या 'गवाह' । कबीर ने जिन तथ्यों को अपने अनुभवों से जानकर अपने जीवन में अपनाया था, उन्हें ही उन्होंने 'साक्षी' अथवा 'साखी' के रूप में लिखा है। साखियाँ अनुभव किए गए सत्य का प्रतीक हैं ।

ग) कबीर ने अपनी साखियों के माध्यम से क्या संदेश देना चाहा है ?

उत्तर - कबीरदास को संत कवि के साथ-साथ समाज सुधारक एवं युग निर्माता भी कहते हैं । उन्होंने अपनी साखियों में समाज में व्याप्त प्रत्येक समस्या को

उजागर कर, उससे छुटकारा पाने और उसे दूर करने पर बल दिया है । उन्होंने सभी प्रकार के आडंबरों का खुलकर विरोध किया । उन्होंने जनमानस का मार्गदर्शन करते हुए कहा है कि वे बुराई के रास्ते को छोड़कर निर्गुण व निराकार ईश्वर की भक्ति करें।

====000====

यह पाठ्यसामग्री घर में ही रहकर तैयार की गई ।